हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 17.06.2017 को विश्व मरु प्रसार रोक दिवस का आयोजन

17 जून पूरे विश्व के साथ-साथ भारत में प्रतिवर्ष **विश्व मरु प्रसार रोक दिवस** के रूप में मनाया जाता है। यह दिन सुरक्षित, स्थिर और टिकाऊ भविष्य के लिए स्वस्थ और उत्पादक भूमि के महत्त्व को याद दिलाने का दिन है। वर्ष 2017 के लिए इसका थीम **"हमारी भूमि, हमारा घर, हमारा भविष्य"** निर्धारित किया गया है।

कार्यक्रम कि शुरुआत करते हुए संस्थान के विस्तार अधिकारी श्री प्रदीप भारद्वाज ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अभिजीत घोष, पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल, राजस्थान, संस्थान के निदेशक, सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि 17 जून को पूरे विश्व मरु प्रसार रोक दिवस के रूप में मनाया जाता है एवं यह हर्ष का विषय है कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा इस दिवस को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि का स्वागत कर अपने विचार प्रकट करते हुए संस्थान के

निदेशक डॉ. वी.पी. तिवारी ने कहा कि यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि आज श्री घोष हमारे बीच है जिनका देश के मरुस्थल क्षेत्रों में कार्य करने का एक लम्बा अनुभव है। डॉ. तिवारी ने कहा कि देश का लगभग 12% भाग मरुस्थल है जिसमें मैदानी इलाकों जैसे राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा हरियाणा के मरुस्थलों को गर्म मरुस्थलों तथा पहाड़ी क्षेत्रों जैसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखण्ड के मरुस्थल को शीत मरुस्थल के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि गर्म एवं शीत दोनों ही मरुस्थलीय क्षेत्रों की पारिस्थितिकी बहुत ही नाजुक हैं तथा इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन अत्यंत ही कठिन है। डॉ. तिवारी ने बताया कि इस संस्थान के कार्यक्षेत्र में हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर राज्यों के शीत मरुस्थल क्षेत्र आते हैं, अत: हमारा दायित्व बन जाता है कि हम इन क्षेत्रों के पारिस्थितिकी के सुधार में अपना योगदान दें सके, इसके साथ-साथ वनों को बचाकर मरुस्थलीकरण को रोकने की दिशा में सतत प्रयास करें।

श्री अभिजीत घोष, पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल, राजस्थान ने बतौर मुख्य अतिथि इस

अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए विश्व मरुस्थलीकरण रोकथाम दिवस के शुरू होने कि पृष्ठभूमि के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा कहा कि यह दिवस मरुस्थलीकरण रोकथाम हेतु सार्वजानिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष 17 जून को मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि मानवीय दबावों के कारण भूमि क्षरण तथा मरुस्थलीकरण की समस्या विश्व के

साथ-साथ भारत में भी एक चुनौती बन गई है। श्री घोष ने राजस्थान राज्य के अपने लम्बे समय के अनुभव के आधार पर बताया कि भूमि क्षरण तथा मरुस्थलीकरण का सबसे बड़ा कुप्रभाव जो देखने में आ रहा है वह यह है कि किसान कृषि को छोड़कर अन्य व्यवसायों को अपना रहे है, जो कि एक चिंता का विषय है। गम्भीर मामलों में लोग पलायन भी कर रहे हैं। उन्होंने अपने संबोधन में देश के विभिन्न मरुस्थल क्षेत्रों के उदहारण देते हुए मरुस्थलीकरण रोकने के लिए विभिन्न उपायों के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी।

अंत में श्री सत्य प्रकाश नेगी, अरण्यपाल तथा प्रभाग प्रमुख, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने मुख्य अतिथि, निदेशक तथा संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

Our Land. Our Home. Our Future.
17 JUNE
WORLD DAY
TO COMBAT DESERTIFICATION
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला